International Journal of Home Science 2020; 6(3): 281-283

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2020; 6(3): 281-283
© 2020 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 13-07-2020
Accepted: 16-08-2020

अंजली कुमारी
शोध–छात्रा, विश्वविद्यालय
गृह–विज्ञान–विभाग, ल.ना. मिथिला
विश्वविद्यालय, दरभंगा, भारत

Corresponding Author:
अंजली कुमारी
शोध–छात्रा, विश्वविद्यालय
गृह–विज्ञान–विभाग, ल.ना. मिथिला
विश्वविद्यालय, दरभंगा, भारत

गृह–प्रबंधन में कामकाजी महिलाओं की समस्या एवं समाधानः एक अध्ययन

अंजली कुमारी

सारांश
बदलते वक्त ने महिलाओं को आर्थिक, शैक्षिक और सामाजिक रूप से सशक्त किया है और उनकी हैसियत एवं सम्मान में वृद्धि हुई है। इसके बावजूद अगर कुछ नहीं बदला तो वह है महिलाओं की घरेलू जिम्मेदारी, खाना बनाना और बच्चों की देखभाल अभी भी महिलाओं का ही काम माना जाता है। यानी अब महिलाओं को दोहरी जिम्मेदारी निभानी पड़ रही है। घरेलू महिलाओं की तुलना में कामकाजी महिलाओं पर काम का बोझ ज्यादा है, इन महिलाओं को अपने कार्यक्षेत्र और घर, दोनों को संभालने के लिए ज्यादा मेहनत करनी पड़ रही है।
वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि शिक्षण सेवा क्षेत्र ने महिलाओ को अत्यधिक आकर्षित किया है। निश्चित अवधि तक कार्य, निश्चित नियम, राजनीतिक हस्तक्षेप का अभाव, सापेक्ष सुरक्षा आदि अनेक ऐसे कारक है जिससे महिलाओं का आकर्षण शिक्षण क्षेत्र की तरफ बढ़ा है। लेकिन कार्य की अनुकुलता और आकर्षण वेतन के साथ–साथ महिलाओं से जुड़ी शिक्षा का स्तर और पारिवारिक पृष्ठभूमि आदि कारक महिलाओं के समक्ष कार्य और परिवार का दोहरा दबाव उपस्थित करते है, अर्जित एवं प्रदत्त मूल्य तथा भूमिका के बीच की कामकाजी महिला किस प्रकार सामंजन करती है? प्रस्तुत अध्ययन इसी तथ्य के उतर की खोज करने का प्रयास है।

प्रस्तावना
गृह–प्रबंधन एवं दोहरी जिम्मेदारियों की बोझ के चलते तनाव एवं अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से घिर चुकी महिलाओं को अब अपने लिए समय निकालने की जरूरत है। खाना बनाने से लेकर बच्चों की परवरिश को वह अपनी प्राथमिकता मानती है, इस सोच में बदलाव जरूरी है। जिन घरों में पति या अन्य परिजन कामकाज में हाथ बँटाते हैं, वहाँ महिलाओं का स्वास्थ अपेक्षाकृत बेहतर पाया जाता है। स्वस्थ महिला, स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज का निर्माण करती है इसलिए महिलाओं को तनाव मुक्त और काम के बोझ से मुक्त रखना परिवार की जिम्मेदारी है।
हमारे देश की आबादी का लगभग आधा भाग महिलाएँ है। संविधान में इन्हे पुरूषों के समान अधिकार दिए है किन्तु अनेक पूर्वाग्रह और लिंग–भेद के परिणाम स्वरूप अनेक असमानताओ का सामना करना पड़ता है। लगभग सभी महिलाओं को शोषण व हिंसा का शिकार होना पड़ता है।
पितृसता ने महिलाओं को उपभोग की वस्तु माना है। पुरूषों ने महिलाओं के जीवन, उनकी योग्यता और उनकी कार्य शैली को निर्धारित करने की चेष्टा की, लेकिन यथार्थ सत्य यह है कि महिला भी पुरुषों की भाँति अपनी अलग पहचान रखती है वह अपने जीवन में उचित चुनाव करने की क्षमता रखती है। शिक्षा के प्रचार व प्रसार से देश मे शिक्षित महिलाओ की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है और पढ़ लिख कर नौकरियाँ करने लगी तथा कामकाजी महिलाओ का एक नया वर्ग चल गया। जिस समाज में महिला की कमाई को अनुचित समझा जाता था, उसी समाज में महिला की कमाई से घर चलने लगे। पति–पत्नी दोनों कमाते हैं, यह गर्व की बात समझी जाती हैं। देश में कामकाजी महिलाओं का इतिहास कोई बहुत पुराना नहीं है। यह स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय संविधान में स्वतंत्रता व समानता के सिद्धान्त से प्रभावित होकर महिलाओं में आत्मनिर्भरता के लिए जो नई सोच और नई चेतना पैदा हुई है, यह उसी का परिणाम है। महिला शिक्षा में प्रगति हुई उसी ने इस क्षेत्र में लोगों को उत्साहित किया। अच्छे जीवन स्तर की इच्छा को बल मिला, यह तो समय की आवश्यकता, परिवार की आवश्यकता, व्यक्तिगत अहम की तुष्टि, समय व्यतीत करने की भी चाह आदि ऐसे कारण है जो कामकाजी महिलाओं का केन्द्र बिन्दू हैं।
अनेक अध्ययनों से यह प्रमाणित होता है कि कार्यरत महिलाओ के सामने मुख्य समस्या संघर्ष की है वे अपने आप को परिवार व कार्यालय के अनुसार कैसे समायोजित करती है। निम्न स्वप्रतिविम्ब और दोहरी भूमिकाएँ कामकाजी महिलाओं के लिए भूमिका संघर्ष पैदा करती है।

जिसका प्रभाव पारिवारिक संबंधो अपेक्षित भूमिकाओ पर पड़ता है। कामकाजी महिलाएँ आज भी आर्थिक रूप से पुरुषो से मुक्त नहीं है क्योकि जो महिलाएँ अपनी परिवार की अर्थव्यवस्था मे योगदान करती है वे अपनी आय को अपनी इच्छानुसार व्यय करने के लिए स्वतंत्र नहीं है। सामाजिक, नैतिक व मनोवैज्ञानिक आयामों में भी उसकी स्थिति पुरूषों के समान नहीं है। जिस प्रकार वह नौकरी करती है, घर का काम करती है, इन सबके प्रति उसकी निष्ठा उसके जीवन के स्वरूप के सन्दर्भ पर निर्भर करती है। और समाज द्वारा उसका मूल्यांकन बिल्कुल अलग परिप्रेक्ष्य मे किया जाता है।

महिलाओं के कामकाजी होने का इतिहास बहुत पुराना नहीं है, पाश्चात्य देशों में औद्योगिक क्रांन्ति के बाद इस प्रक्रिया में काफी तेजी आयी लेकिन भारत में यह प्रक्रिया अन्य देशों की तुलना में कुछ देरी से प्रारम्भ हुई। महिलाओं का कार्यक्षेत्र में प्रवेश, उनकी आर्थिक आवश्यकता, आधुनिकीकरण एवं शिक्षा, आर्थिक विवशता, उपयोगी व उच्चतर जीवन स्तर अनेक कारणों से रहा होगा।

व्यवसायिक भूमिका और परम्परागत भूमिकाओं को एक साथ निभाना एक महिला के लिए प्राकृतिक व कृत्रिम रूप से बहुत कठिन हो जाता है। आज भी परिवार में अनेक कार्य व भूमिकाएँ है जिनके निर्वाह की पूरी जिम्मेदारी एक महिला की ही मानी जाती है। इस प्रकार एक कार्यरत महिला के लिए दोनो क्षेत्रों में समायोजन करना बड़ी समस्या उत्पन्न कर देता है।

सच तो यह है कि कामकाजी महिलाओं को तो अपने सीमित क्षेत्र में ही जिम्मेदारी संभालनी होती है पर गृहिणी को तो कई मोर्चों पर उत्तरदायित्व निभाना पड़ता है। उसे गृह प्रबंधन में एक कार्यालय के प्रधान की, बच्चों की शिक्षा में शिक्षिका की और घर की अर्थव्यवस्था में वित्तीय सलाहकार की भूमिका अदा करनी पड़ती है। यदि वह इन दायित्वों को ठीक से न निभाएँ तो गृह व्यवस्था ही चरमरा जाए। इसका खामियाजा पूरे परिवार को उठाना पड़ता है। फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि गृहिणी की जिम्मेदारी दूसरे बाहर के कार्यों से हेय है? एक बात और, कामकाजी महिला अपने बच्चों पर उचित ध्यान नहीं दे पाती। बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने, उनमें अच्छी आदतें डालने और जीवन संघर्ष में सफल होने की प्रेरणा एक गृहिणी ही दे सकती है जबकि कामकाजी महिला अपने ही काम में इतनी उलझी रहती है कि बच्चों की तरफ ध्यान कम ही दे पाती है। आमतौर पर कामकाजी महिलाओं के बच्चे नौकरों के भरोसे या शिशु सदनों में पलते हैं। प्रबंधक शब्द का ध्यान आते ही अनेक बातें ध्यान में आती हैं। इस शब्द के साथ सफलता का आभास होता है। हम उच्च स्तरीय प्रबंधकों को सुंदर भवनों में रहते, नई–नई गाड़ियों में आते–जाते देखते हैं पर यदि किसी के घर में कुशल गृहिणी न हो तो उसकी कार्यक्षमता में ग्रहण लग जाए। प्रबंधक दिनभर में अनेक निर्णय लेते हैं और उन्हें चतुराईपूर्वक स्थिति के अनुसार कार्यान्वित करते हैं। समस्याओं से जूझते हुए हल निकालते हैं। हर कार्य में गड़बड़ियाँ हो सकती हैं जिन्हें धैर्य व सूझबूझ से निबटाना होता है। समय का नियोजन कर उसके अनुसार काम करते हैं। कुशल प्रबंधक काम कराने के गुर जानता है। वह देखता है कि क्या संस्थान समय पर अपने वादे पूरे कर रहा है? वादे के अनुसार काम दिया जा रहा है या नहीं? कार्य का विकेंद्रीकरण कर दूसरों को अपने अधिकार क्षेत्र में सहयोगी बनाता है। वह जानता है कि कार्य किस तरह मातहतों में बाँटे कि वह सुचारू रूप से होता चला जाए। देखें कि गृहणियों का उपर्युक्त बातों से क्या संबंध है। परिवार में ऐसा व्यक्ति कौन है जो समय का प्रबंध करता है, निर्णय लेता है, समस्याएँ हल करता है, दूसरों से काम लेता है व दूसरों को अपनी जिम्मेदारी में सहयोगी बनाता है? निस्संदेह एक कुशल गृहिणी ही तमाम उत्तरदायित्व वहन करती है। जिन महिलाओं ने गृह प्रबंधन को अपना व्यवसाय बना लिया है, इस कसौटी पर खरी उतरती हैं। कहा गया है, **'बिन घरनी घर भूत का डेरा'** जरा किसी भी घर, जहां गृहिणी नहीं है, में जाकर देखिए, घोर अव्यवस्था दिखाई देगी। सारा घर भिनभिनाता नजर आएगा। एक गृहिणी का महत्व प्रबंधक से कहीं अधिक होता है। यदि प्रबंधक अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाता तो कंपनी का नुकसान होता है। उसे निकालकर दूसरा व्यक्ति रखा जा सकता है पर यदि गृहिणी अपना दायित्व नहीं निभाती तो परिवार का विघटन होता है। बच्चों का लालन–पालन ठीक से नहीं होता। वे बिगड़ जाते हैं और आर्थिक संकट गहराता है। कार्यालय के प्रबंधक के बीमार पड़ने से कोई अंतर नहीं पड़ता। पर यदि गृहिणी बीमार पड़ जाए तो घर बिलबिला उठता है। उसी समय गृहिणी के कार्यों का महत्त्व परिवार वाले समझते हैं। उसे अपदस्थ करने का तो सवाल ही नहीं उठता। हर गृहिणी को अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए सवेरे उठकर अनेक निर्णय लेने पड़ते हैं और यह सिलसिला दिनभर चलता रहता है। समस्याएँ उठती हैं, उनसे निबटना होता है। महँगाई बढ़ रही है और परिवार त्रस्त हैं। अधिकांश मामलों में गृहणियों को ही तमाम आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होती है। आखिर घर के बजट के लिए वही तो जिम्मेदार होता है। यदि कोई गृहिणी सही मायने में प्रबंधक है तो खरीदारी उचित दामों में करेगी। जो काम एक प्रबंधक अनेक सहायकों की मदद से करता है, वह गृहिणी स्वयं करती है। वह खुद ही व्यवस्था देखती है, प्रशासन देखती है, बाहरी तालमेल बैठाती है, बच्चों के झगड़ें तय करती है व पड़ोसियों से मधुर संबंध रखती है। प्रबंधक सफल व असफल होते हैं। सफल प्रबंधक के कार्यालय में व्यवस्था रहती है, समय पर काम होता है, कर्मचारी प्रसन्न रहते हैं। सारे काम सुचारू रूप से होते हैं पर एक अकुशल प्रबंधक के कार्यालय में अव्यवस्था रहती है, कोई काम समय से नहीं होता। जो गृहिणी अपने परिवार को बाँधे रहती है, वहाँ हर काम समय से होता है। हर सदस्य प्रसन्न रहता है पर एक फूहड़ गृहिणी के घर में जगह–जगह मकड़ी के जाले, गंदगी व धूल ही दिखाई देती है। जो महिला गृहिणी बनने का निर्णय लेती है, वह एक उत्तम व्यवसाय हाथ में लेती है। किसी भी प्रबंधक, अर्थ प्रबंधक या काम गृहिणी के कार्य से बड़ा नहीं होता। समय आ गया है कि लोग इस सच्चाई को समझें। सबसे बड़ी बात तो यह है कि गृहिणी अपने बच्चों का चरित्र निर्माण करती है। वह अपनी प्रतिभा का उपयोग पत्नी व मां के रूप में कर एक अहम भूमिका निभाती है। अतः अपने इस व्यवसाय के बारे में बताने में संकोच कैसा?

गृह–प्रबंधन में कामकाजी महिलाओं की समस्या एवं समाधान हेतु पारिवारिक संरचना एवं प्रस्थिति, महिला के कार्यरत होने के उत्तरदायी कारण, महिलाओं की वर्तमान व्यवसाय से संतुष्टि, गृह–प्रबंधन में पुरुषों की भागीदारी एवं महिला द्वारा परिवारों के साथ सामंजस्य हेतु शोध में प्रश्नावली का उत्तरदाताओं की उत्तर को तालिका–1 से तालिका– 5 में दर्शाया गया है–

पारिवारिक संरचना एवं प्रस्थिति

तालिका 1: कामकाजी महिलाओं के परिवार का स्वरूप

परिवार स्वरूप	उत्तरदाता	प्रतिशत
संयुक्त परिवार	15	30
एकांकी परिवार	35	70
योग	50	100

तालिका संख्या (1) से ज्ञात होता है कि परिवार के स्वरूप से सम्बन्धित मान्यता के अनुसार अधिकांश महिलाएं (70 प्रतिशत) एंकाकी परिवार से संबंधित है, जबकि (30 प्रतिशत) महिलाएँ संयुक्त परिवार से सम्बन्धित है अतः इस तालिका द्वारा प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामान्यत कार्यरत महिलाएँ सयुक्त परिवार की अपेक्षा एकांकी परिवार से सम्बन्धित है, की पुष्टि होती है।

तालिका 2: महिलाओं के कार्यरत होने के उत्तरदायी कारण

उत्तरदायी कारण	उत्तरदाता	प्रतिशत
घर की आर्थिक स्थिति के सुदृढ़ बनाने हेतु	25	50
आत्मनिर्भर होने के लिए	15	30
अपनी शिक्षा का उपयोग करने के लिए	10	20
योग	50	100

तालिका संख्या (2) से ज्ञात होता है कि महिलाओं के कार्यरत होने से संबंधित मान्यता के अनुसार अधिकांश महिलाएँ (50 प्रतिशत) घर की आर्थिक स्थिति को सुदढ़ बनाने हेतु, (30 प्रतिशत) महिलाएँ आत्मर्निर होने के लिए और (20 प्रतिशत) महिलाएँ अपनी शिक्षा को उपयोगी बनाने के किए कार्यरत है। इस प्रकार इस तालिका के अनुसार आधिकांश महिलाएँ अपने घर की आर्थिक स्थिति की सुदढ़ बनाने हेतु इस व्यवसायिक क्षेत्र में कार्यरत है।

तालिका 3: महिलाओं के वर्तमान व्यवसाय से संतुष्टि

व्यवसाय से संतुष्टि	उत्तरदाता	प्रतिशत
हाँ	35	70
नहीं	10	20
निश्चित नहीं	5	10
योग	50	100

तालिका संख्या (3) से ज्ञात होता है कि अधिकांश महिलाएँ (70 प्रतिशत) अपने वर्तमान व्यवसाय से संतुष्ट है जिस कारण वे वर्तमान व्यवसाय में बने रहना चाहती है।

तालिका 4: गृह–प्रबन्धन में पुरूषों की भागीदारी

उत्तर	उत्तरदाता	प्रतिशत
हाँ	20	40
नहीं	15	30
कभी–कभी	15	30
योग	50	100

तालिका संख्या (4) से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक महिलाओं को (40 प्रतिशत) गृह कार्य में पुरूषों का सहयोग मिलता है, (30 प्रतिशत) ने कहा की बिल्कुल सहयोग नहीं मिलता जबकि 30 प्रतिशत ने कहा की कभी सहयोग करते है कभी नहीं।

तलिका 5: महिलाओं द्वारा परिवारों के साथ सामंजस्य

उत्तर	उत्तरदाता	प्रतिशत
हाँ	35	70
नहीं	10	20
कभी–कभी	05	10
योग	50	100

तालिका संख्या (5) के अनुसार ज्यादातर महिलाएँ (70 प्रतिशत) परिवार के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम है लेकिन ये तथ्य भी सामने आया है कि ये वे महिलाएँ है। जिन्हें गृह–प्रबंधन में पुरूषों की भागीदारी प्राप्त होती है। अतः कह सकते है कि गृह–प्रबंधन में पुरूष भागीदारी कार्यरत महिलाओं द्वारा परिवार के साथ सामंजस्य स्थापित करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत आलेख में गृह–प्रबंधन और कार्यरत महिलाओं की भूमिका और उनमें सामंजस्य स्थापित करती महिलाओं का वर्णन से संबंधित प्रश्न के उत्तर में पाया कि कामकाजी महिलाओं की सबसे बड़ी समस्या है दोहरी जिम्मेदारियों का बोझ। महिलाओं पर व्यवसाय का उत्तरदायित्व बढ़ा देने के बावजूद उनकी पारंपरिक भूमिका में कोई विशेष कांट–छाँट नहीं की गई है किन्तु ये तथ्य भी सामने आये है कि वर्तमान युग में पुरूष तथाकथित स्त्रियोचित कार्य करने में शर्म महसूस नहीं करते है तथा वे गृह–प्रबन्धन में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। वर्तमान में महिलाएँ संयुक्त परिवारों से निकलकर, एकांकी परिवार में रहना चाहती है। वे एकांकी परिवारों की स्थापना कर स्वतंत्र जीवन व्यतीत करना और पारिवारिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना चाहती है। संक्षिप्त रूप से कहा जा सकता है कि महिलाओं का स्थान पुरूषों के समान महत्वपुर्ण है, अतः उनकी प्रत्येक क्षेत्र में उपस्थिति की नकारा नहीं जा सकता है।

अतः महिलाओं को अपने कार्यक्षेत्र एवं समाज में होने वाली असुविधा को स्वयं दूर करना होगा। इसके लिए उसे संविधान में वर्णित सभी अधिकारों का प्रयोग करना होगा, उनके द्वारा ऐसे सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक संस्थानों का निर्माण किया जाना चाहिए जिसके द्वारा वे समानता के स्तर पर आ सके और समाज में स्वतंत्र नागरिक की भाँति अपने अधिकारों तथा अवसरो का प्रयोग कर सके।

सदर्भ

1. आहूजा राम (2009) : भारतीय सामाजिक व्यवस्था रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
2. स्वतंत्र जन समाचार, मुंबई, 16 सितंबर, 2006
3. सिंह वी.एन. (2010) : 'आधुनिकता एवं महिला सशक्तिकरण' रावत पब्लिकेशन जयपुर।
4. गुडे, विलियम जे. (1968) : 'वर्ल्ड रिवोल्यूशन एंड फैमिली पैटर्न' दी फ्री प्रेस न्यूयार्क कोलियर – मैकलिमन, लंदन
5. शर्मा अनुपम तथा वार्षणेय संगीता (2013) : 'इक्कीस्वी शताब्दी में महिला समस्याएँ एवं सुभावनाएँ', अल्फा पब्लिकेशन नई दिल्ली।
6. डॉ. प्रमिला कपूर, कामकाजी भारतीय नारी, राजपाल एंड सन्स नई दिल्ली
7. वर्मा अंजली (2009) : भारत में कार्यशील महिलाएँ, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।